RUSSIA UNDER LENIN (PART-1)

For: P.G. Sem-2,CC-6

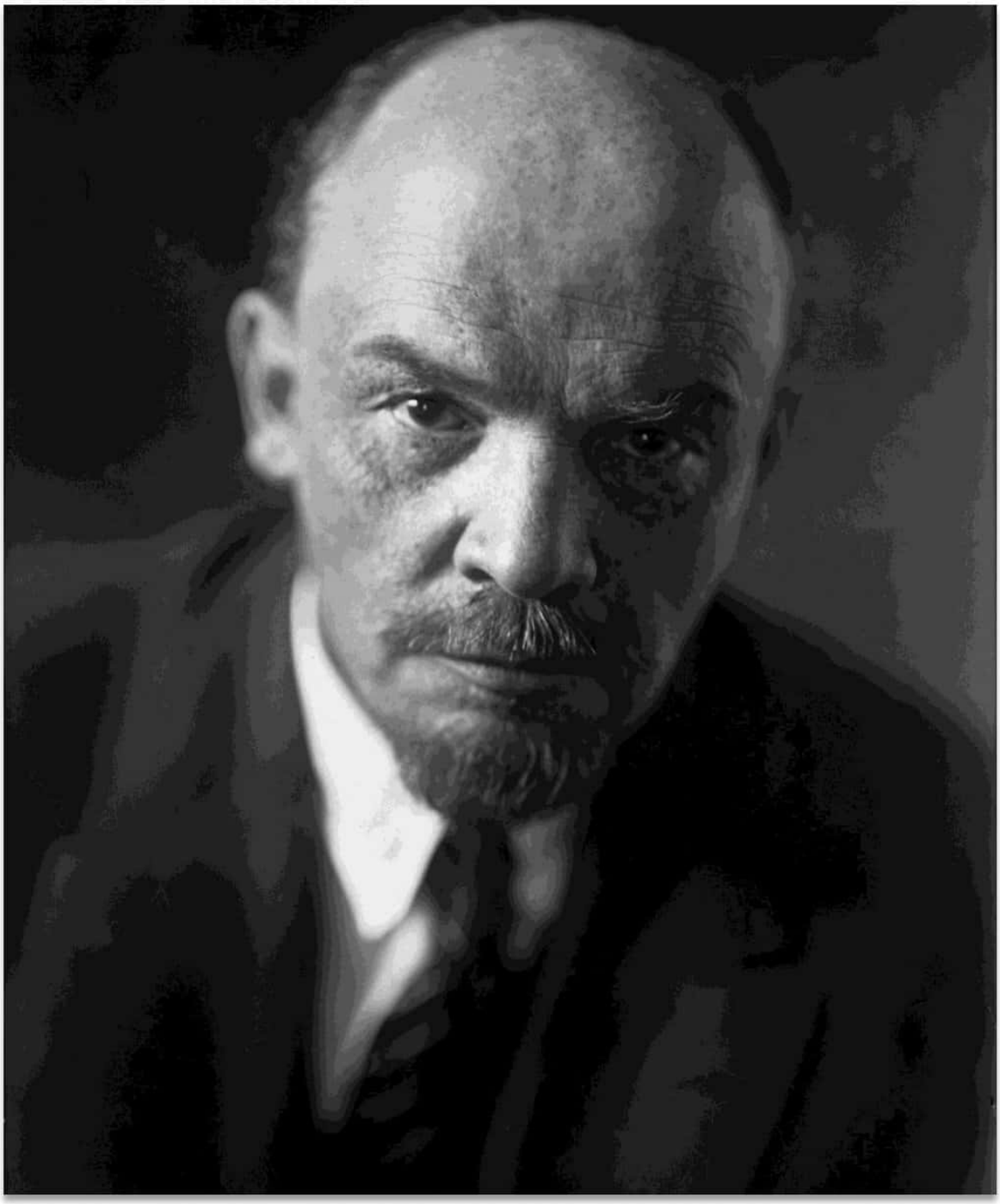

LENIN (1870-1924) Photo source :Wikipedia

Scanned with CamScanner

ब्लादीमिर इलिच उलियानोव लेनिन(Vladimir llyich Ulyanovsk Lenin) रूस की बोल्शेविक क्रांति का नायक और समाजवादी व्यवस्था के जनक के रूप में प्रसिद्ध है। लेनिन का जन्म **23 अप्रैल 1870 ई.** को वोल्गा तट पर **Simbirsk** नामक ग्राम में हुआ था। लेनिन के पिता का नाम **इलिया निकोलाइविच उल्यानोव** और माता का नाम **मारिया अलेक्जेन्डरोब्ना** था। लेनिन का परिवार मध्यमवर्गीय परिवार था और उसके पिता शिक्षा विभाग में अधिकारी थे। बड़े भाई को एलेग्जेंडर द्वितीय की हत्या के अपराध में मृत्युदंड दे दिया गया जिसका लेनिन के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। 1897 ई. में कजान विश्वविद्यालय में वह विधि संकाय का छात्र हो गया किंतु 1888 उसी में से क्रांतिकारी गतिविधियों में लिप्त होने के कारण निर्वासित कर दिया गया और अंततः 1891 में सेंट पीटर्सबर्ग से उसने विधि स्नातक की परीक्षा पास की। लेनिन मार्क्स के विचारों को पक्का अनुयाई था और उन्हीं विचारों के आधार पर मजदूर संगठन बनाकर मार्क्सवादी सिद्धांतों का प्रचार किया। 1894ई. में उसने एक पुस्तक- **जनता के मित्र कौन है और वे कैसे सामाजिक जनतंत्र वादियों से लड़ते हैं** लिखी जिसमें उसने आतंकवादियों की

Scanned with CamScanner

भर्त्सना की। सेंट पीटर्सबर्ग में उसने **श्रमिक वर्ग उन्मुक्ति संघर्ष संघ** की स्थापना की। उग्र साम्यवादी विचारों के कारण रूस की सरकार ने उसे कैद कर सेंट पीटर्सबर्ग के जेल में डाल दिया जहां पर उसने **रूस में पूंजीवाद का विकास** नामक पुस्तक लिखी तथा पूंजीवाद के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया। फरवरी 1897 ई.में लेनिन को 3 वर्ष के लिए साइबेरिया निर्वासित कर दिया गया ।वहां पर उसकी मुलाकात **क्रुप्सकाया (Krupskaya)** से हुई जो उसकी पत्नी बनी।इसी निर्वासन काल में लेनिन ने **रूसी सामाजिक जनतंत्र वादियों का कत्तव्र्य** नामक पुस्तक लिखी। 1900 ईसवी लेनिन का निर्वासन कार्य समाप्त हुआ इसके पश्चात उसने जर्मनी को अपना केंद्र बनाया और यहीं से **इस्क्रा(Iskra)** अर्थात **चिंगारी** नामक पत्रिका का संपादन आरंभ किया जो श्रमिक वर्ग की मुक्ति का संदेशवाहक बन गया।

मार्च 1917 में रूसी क्रांति के वक्त लेनिन **ज्यूरिक** में था तथा क्रांति का समाचार मिलने पर वह खुशी से उछल पड़ा ।वह जर्मनी की सहायता से 29 साथियों के साथ रूस आया और अपनी योग्यता, संगठन क्षमता से अक्टूबर-नवंबर की क्रांति द्वारा बोल्शेविक सत्ता स्थापित कर क्रांति को सफल बनाया। लेनिन ने **इस्क्रा(1900ई.) वी.प्रयोद(1904ई.)** तथा **प्राब्दा(1912)**

Scanned with CamScanner

आदि पत्रिकाओं के सहारे उसने सर्वहारा के मानस को क्रांति के लिए तैयार किया। उसने अपने कार्यक्रमों के बारे **में क्या करना है(**1902ई.**), भौतिकवाद और प्रायोगिक आलोचना**(1909 ई.) **साम्राज्यवाद, पूंजीवाद का अंतिम चरण**(1916ई.) **राज्य और क्रांति(1917ई.)** आदि महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी और युद्ध काल में **युद्ध और श्रमिक** के प्रकाशन द्वारा श्रमिकों का मार्गदर्शन किया।

- लेनिन,मार्क्स की समाजवादी विचारधारा का पक्का समर्थक था, किंतु उसने रूसी परिस्थितियों के अनुसार मार्क्सवाद की व्याख्या की। मार्क्स ने विचार दिया था कि पूंजीवाद की उन्नत अवस्था में संपूर्ण सर्वहारा वर्ग के अंदर चेतना का संचार होगा और वह पूंजीपति वर्ग को धराशाई कर देगा। लेनिन ने एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ होने के नाते यह अनुभव किया कि संपूर्ण सर्वहारा वर्ग को सचेत और संगठित होने में बहुत ज्यादा समय लगेगा और उसमें बहुत सारी बाधाएं आएगी ।अतः क्रांति की शक्तियों को सक्रिय करने के लिए सर्वहारा वर्ग अधिक सचेत, अधिक समर्थन वाले सदस्यों को आगे आना चाहिए और क्रांति की बागडोर संभाल लेनी चाहिए। इसी संदर्भ में लेनिन रूस में

Scanned with CamScanner

साम्यवादी दल की स्थापना की जिसका मुख्य कार्य सर्वहारा वर्ग को नेतृत्व प्रदान करना तथा क्रांति के बाद समाजवादी शासन की स्थापना करना था।

- मार्क्स ने पूंजीवाद को मिटाने का प्रचार किया था लेकिन इस विचार को आगे बढ़ाते हुए उसमें एक नया आयाम जोड़ा ।उसने **साम्राज्यवाद** को भी समाजवादी विचारधारा और कार्यक्रम का अंग बना दिया।
- लेनिन ने बुर्जुआ तत्वों से किसी भी प्रकार के समझौते का विरोध किया और बुर्जुआ आदर्शों का प्रतिनिधित्व करने वाले सामाजिक- आर्थिक तत्व और व्यवस्था को पूर्ण तौर पर नकार दिया। फरवरी-मार्च 1917 की क्रांति बुर्जुआ प्रजातांत्रिक क्रांति थी जिसे हटाकर श्रमिकों एंव कृषकों की सत्ता स्थापित करने की बात की ।
- लेनिन मानता था की क्रांति की सफलता के लिए रूसी सर्वहारा को यूरोप के अन्य क्षेत्रों के सर्वहारा से संपर्क करना चाहिए।
- लेनिन मेनशेविकों के इस मत से सहमत नहीं था कि क्रांति के प्रथम चरण में नेतृत्व बुर्जुआ के हाथ में हो और फिर वह सर्वहारा के हाथ में पहुंचे। लेनिन यह मानता था कि

Scanned with CamScanner

रूसी बुर्जुआ वर्ग प्रजातांत्रिक क्रांति लाने में सक्षम है किंतु वे स्वार्थी और अवसरवादी है अतः क्रांति के दोनों चरणों का नेतृत्व सर्वहारा वर्ग के हाथों में होना चाहिए।

- लेनिन के अनुसार इस समाजवादी क्रांति से भूस्वामी और पूंजीपति अपना अस्तित्व खो देंगे और एक नए समाज का उद्भव होगा। इस समाज में श्रमिकों के गणतंत्र की स्थापना होगी जो श्रमिकों और कृषकों के अधिनायक तंत्र पर आधारित होगी।

To be continued.....

BY: ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor,
P.G.Dept.of History
Maharaja College,Ara.

Scanned with CamScanner